निर्णय निर्माण व्यवस्था

यह सिद्धांत अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में राज्यों के व्यवहार का विश्लेषण करता है अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति अत्यन्त विस्तृत एवं जटिल है अध्ययन के सिद्धान्त पर सामान्य सिद्धान्त प्रतिपादित करना सम्भव नहीं है अतः अंतर्राष्ट्रीय राजनीति को महत्वपूर्ण भागों के रूप में विभाजित करके पढ़ा जाना बेहतर है। क्योंकि अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में विदेश नीतियां सबसे महत्वपूर्ण स्थान रखती है अतः यह नीतियों ~~का~~ का विश्लेषण करता है इसके अन्तर्गत राज्यों द्वारा लिये गये अनेक निर्णय के पीछे क्या कारक है। केवल विदेश नीति का अध्ययन करने के कारण यह विदेश नीति का आंशिक सिद्धान्त है।

इतिहास :- इस पद्धति का सर्वप्रथम आगमन 1738 में डेनियल बरनौली इसे अर्थ, शास्त्र समाजशास्त्र और मनोविज्ञान में विकसित किया गया। राजनीति विज्ञान में प्रथम प्रयोग रॉबिन्सन ने किया है। अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में इसका प्रथम प्रयोग 1950 के दशक में Richard Snyder एच. डब्लू Bruck तथा बर्टन सापिन ने किया है।

उद्देश्य :- इसका उद्देश्य सामान्य सिद्धान्त प्रतिपादित न करके विदेश नीति के विश्लेषण के लिए महत्वपूर्ण आंकड़ों को इंगित करना है और उनका विश्लेषण करना है।

निर्णय निर्माण :- समस्या समाधान और नीति निर्माण एक दूसरे से सम्बद्ध है। फिर भी इनके अन्तर पाया

जाता है।

सामान्य समाधान – समस्या पहले से है विकल्पों में से समाधान ढूंढना है।

→ निर्णय निर्माण :- इसमें समस्या और विकल्प दोनों ढूंढने होते हैं।

→ नीति निर्माण :- निर्णयों का समुच्चय नीति कहलाता है नीति वह व्यवस्था है जिसके अन्तर्गत निर्णय किये जाते हैं। अर्थात नीति निर्माण एक सामाजिक प्रक्रिया है अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में चुनौतियों का ढूंढना और उनका समाधान करना अतः इस सिद्धान्त के माध्यम से उन संस्थाओं का विश्लेषण किया जाता है जो निर्णय निर्माण से सम्बंधित हैं। इस वातावरण का निर्माण किया जाता है जिसमें निर्णय लिया गया है। अर्थात निर्णय से सम्बंधित बाह्य, आन्तरिक कारकों का विश्लेषण किया जाता है निर्णयकर्ताओं के व्यवहार का विश्लेषण किया जाता है।

हेरॉल्ड लासवेल :- के अनुसार निर्णय प्रक्रिया में सात चरण होते हैं

(i) सूचना :-
(ii) अनुसंधान (विकल्पों की खोज)
(3) विकल्पों में एक विकल्प का चुनाव करना
(4) विकल्प को ऐसे प्रस्तुत करना जैसे कि वह बिलकुल नया हो।
(5) चुने विकल्प को लागू करना
(6) लागू करने के पश्चात विकल्पों का मूल्यांकन करना
(7) निर्णय उचित नहीं हो तो उसका समापन करना।

Scanned with CamScanner

निर्णय निर्माण सिद्धान्त में तीन शाखाएं हैं जो लोग वातावरण के कारकों को महत्व देते हैं (1) हेराल्ड स्प्राउट (2) मार्गरेट स्प्राउट

(2) जो व्यक्ति कारकों को अधिक महत्व देते हैं इसमें अल्बर्ट जे. रेस, जार्ज तथा जूलियट जार्ज, कुछ विचारक उन कारकों पर महत्व देते हैं जिनसे निर्णय बनते हैं जैसे, विधायिका कार्यपालिका, दबाव समूह, जनमत मीडिया इत्यादि,

(4) ज्ञान वर्धन के अनुसार सम्पूर्ण प्रक्रिया का अध्ययन किया जाना चाहिए। , बरनार्ड जेम्स राबिन्सन, Hills Man

मूल्यांकन :-

(1) यह सिद्धान्त एक प्रकार की अनिश्चितता से ग्रसित है। अर्थात यह सिद्धान्त यह नहीं बताता कि कौन सा तत्व निर्णय निर्माण में सर्वाधिक महत्वपूर्ण था।

(2) यह मूल्य विहीन संकल्पना है अर्थात उद्देश्य हीन संकल्पना है यह केवल निर्णयों का विश्लेषण करता है लेकिन यह नहीं बताता कौन सा निर्णय उचित था कौन सा अनुचित था।

(3) इस सिद्धान्त में केवल उन्हीं निर्णयों को लिया जाता है जो घटित होते हैं। उन निर्णयों का विश्लेषण नहीं करते जो भविष्य में लिए जा सकते हैं।

(4) इसमें निर्णय प्रक्रिया को इस रूप में व्यक्त किया जाता है कि यह काफी सोची समझी रूप में की गई प्रक्रिया है जबकि वास्तविक निर्णय इसमें हस्तक्षेपात्मक

रूप से नहीं किये जाते है।
यह अंतर्राष्ट्रीय राजनीति का आंशिक सिद्धान्त है यह केवल विदेश नीति का अध्ययन करता है अंतर्राष्ट्रीय राजनीति की दृष्टि से महत्वपूर्ण शक्ति संतुलन अंतर्राष्ट्रीय कानून, शांति, सामूहिक संरक्षण आदि की व्याख्या नहीं करता यह निर्णय की परिस्थिति का पुर्ननिर्माण करके ही वास्तविक परिस्थिति के बारे में सोचते है जिसमें निर्णय किया गया है व यहाँ पर वास्तविक परिस्थितियां का आंकलन नहीं किया जाता निर्णय लेने वाले कर्ता के अनुसार निर्णय किया जाता है, वस्तु निष्ठ आंकलन नहीं करता।

उपयोगिता :- इसके द्वारा विदेश नीतियों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

(i) अंतर्राष्ट्रीय राजनीति का काफी आंकड़ा एकत्रित होता है क्योंकि विदेश नीति ही अंतर्राष्ट्रीय राजनीति का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है। यह छोटे-स्तर के सिद्धान्त निर्माण में सहायक है इसे केस स्टडी Method मेथड कहा जा सकता है।